कहानी

सुधा ओम ढींगरा

अँधेरा-उजाला

पार्टी ने अपना रंग जमाना शुरू कर दिया। चारों तरफ़ चहल पहल है। तबले और सितार की जुगल बंदी की हल्की-हल्की ध्वनि वातावरण को रोमांचित बना रही है। पीने वाले बार के आस-पास सिमटे हुए हैं और बार टेंडर से अपनी-अपनी पसंद की कॉकटेल बनवा रहे हैं। कई अपना गिलास था में दूर कोने में जा बैठे हैं और बैठते ही उनकी अमेरिका की राजनीति पर बातचीत शुरू हो गई। बातचीत शुरू होते ही वे सब रिपब्लिकनज़ और डेमोक्रेट्स में बँट गए। उसी बातचीत में भारतीय राजनीति पर बहस भी शुरू हो जाएगी। वह उसी कोने में बैठी है। एक मरीज़ से बात कर रही है। यह तो शुक्र है कि उसकी बात समाप्त हो गई और वह वहाँ से उठ गई। अन्यथा पीने वालों का शोर उसे बात ही नहीं करने देता। पार्टियों में वह इस पूरे ग्रुप से दूर ही रहती है। एक दो पैग गटक कर हर पार्टी में इन की राजनीतिक बहस जो रूप धारण करती है, वह उससे घबराती है। इस ग्रुप से परे रहने में ही बेहतरी समझती है।

पार्टी में बैठी वह मरीज़ से बात कर रही है। किसी ने ध्यान नहीं दिया। सभी जानते हैं वह इंटरनल मेडिसिन की डॉक्टर इला भारती है और कॉल पर है। यहाँ के डॉक्टरों के साथ यह आम बात है। पार्टी में होते हुए भी फ़ोन पर रहते हैं, डॉक्टरों की रोगियों के प्रति इस ज़िम्मेदारी से सभी परिचित हैं।

वहाँ से उठकर उसने चारों ओर देखा। वह बैठने के लिए उचित स्थान को तलाशने लगी। उसे थोड़ी दूर युवा महिलाएँ घेरा बनाकर बैठीं नज़र आईं। कुछ के हाथ में वाइन के ग्लास हैं और कुछ सॉफ़्ट ड्रिंक्स के ग्लास थामे हुए हैं। महिलाओं के घेरे में एक कुर्सी ख़ाली है, उसने देख लिया और वहउस कुर्सी पर जा बैठी। बच्चों की तारीफ़ें हो रही हैं। वह चुपचाप सुनने लगी। वह इस दौर को पार कर चुकी है। उसके बच्चे बड़े हो गए हैं, डॉक्टरी की पढ़ाई कर रहे हैं ।

सुमन अपनी बेटी के बारे में बता रही है- 'मेरी सोनाली तो एंजल है। टीचर्ज़ भी कहते हैं वह एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी जीनियसहै। डिबेट में बहुत स्ट्रॉन्ग लॉजिक देती है। सामने वाले को जवाब नहीं सूझता।'

मंगला के भाव बदले-'टीचर्ज़ तो मेरी बेटी अनिका को गिफ़्टेड एंड टेलेंटेड बच्ची कहते हैं। भरत नाट्यम सीखती है, ताइक्वांडो कीब्लैक बेल्ट होल्डर है। सॉकर खेलती है। डिबेटर है......' तभी इला ने महसूस किया कि बच्चों की तारीफ़ें नहीं हो रहीं बल्कि एक दूसरे के बच्चे को कम आँकने का प्रयोजन सुमन और मंगला कर रहीहैं। वह वहाँ से भी उठ गई। छोटे –छोटे बच्चों को लेकर माँओं का डींगे मारना और उन्हें प्रतिस्पर्धाओं में झोंकना उसे पसंद नहीं।

बहुत से माँ-बाप उसने ऐसे देखे हैं जो अपनी अतृप्त इच्छाओं को बच्चों से पूरा करना चाहते हैं। उससे बच्चे किस मानसिक तनाव से गुज़रते हैं माँ-बाप कभी महसूस ही नहीं कर पाते। कई बार बच्चे अवसाद में चले जाते हैं। ऐसे में बच्चों के व्यक्तित्व का सही विकास नहीं हो पाता।

उसने फिर इधर-उधर देखा। अधेड़ उम्र की महिलाएँ अलग ग्रुप बना कर बैठी हैं। वह उनकी ओर बढ़ गई, हालाँकि वह न तो युवाओं में बैठ पाती है और न ही अधेड़ उम्र के लोगों में। वे इन दोनों के मध्य की उम्र में है पर दिलेर छाबड़ा की पार्टी में उसकी उम्र की महिलाएँ आती ही नहीं। युवा वर्ग में दिलेर छाबड़ा के बेटे और बहू के दोस्त-मित्र होते हैं और अधेड़ उम्र के दिलेर और मधु के। वह तो छाबड़ा परिवार की डॉक्टर है इसलिए पार्टियों में उसे ज़रूर बुलाया जाता है। छाबड़ा परिवार की पार्टियों में आना उसे और उसके पति को अच्छा लगता है और उन्हें मज़ा भी बहुत आता है ख़ास कर गाने-बजाने की महफ़िल का। हाँ उसे थोड़ी मिलने-जुलने में दिक़्क़त होती है। कहीं भी कोई सार्थक बात नहीं होती। वह अक्सर अपनी ही इस सोच पर मुस्करा पड़ती है, पार्टियों में सार्थक बात.... हाउ फ़न्नी! अब अधेड़ उम्र के ग्रुप को ही देखो! कोई घुटने रिप्लेसमेंट

ISSN 2320 - 7728

की बात कर रहा है, कोई शोल्डर फ़्रीज़ होने की। कोई रात को नींद न आने की समस्या बता रहा है तो कोई कुछ और..... वह वहाँ से उठने का सोच ही रही है। सारा दिन वह यही तो सुनती है....तभी दिलेर छाबड़ा ने माइक पकड़ा और कहना शुरू किया- 'आज मैं एक ऐसे कलाकार से मिला रहा हूँ, जो सबको पंजाब की धरती पर ले जाएगा और वहाँ की मिट्टी की भीनी-भीनी ख़ुशबू आपको आने लगेगी। मिलिए..... मीना और उसके पति कमल से! इंग्लैण्ड से आए हैं और इस शहर में नए हैं। कहते हैं कि यहाँ हम अजनबी हैं, कुछ ऐसा ही महसूस कर रहे हैं, पर मैं दावे से कहता हूँ कि आज के बाद ये दोनों अजनबी हमारी मित्र मंडली में शामिल हो जाएँगे। नयापन और अजनबीपन सब दूर हो जाएगा।' चारों तरफ़ तालियाँ बज उठीं....

'तो आइए, मीना जी माइक सँभालिए- 'कह कर दिलेर छाबड़ा माइक से परे हट गए। दूर कोने से उठकर एक युवा जोड़ा माइक के पास आया। वह कब से उस जोड़े को वहाँ बैठे देख रही थी। सबसे दूर अलग-थलग बैठे होने से उसका ध्यान बार-बार उधर जा रहा था। उस कोने में हल्का सा अँधेरा है, वहाँ रोशनी पूरी तरह से पहुँच नहीं पा रही। उसने सोचा नया युगल है, भीड़ से हटकर बैठना चाहता है, इसलिए वहाँ बैठा है। उसे पार्टी में अलग-अलग लोगों की अलग-अलग गतिविधियाँ देखने का बड़ा आनंद आता है। उन दोनों को भी इला ने कई बार कनखियों से देखा।

मीना ने माइक पकड़ा और शहर के जाने-माने तबला वादक रमेश माथुर ने तबला और सुरेश भट्टाचार्य ने हार्मोनियम सँभाला। छाबड़ा परिवार की पार्टियों में रमेश और सुरेश हमेशा तबला और हार्मोनियम बजाते हैं।

मीना के चेहरे पर रौशनी पड़ते ही वह चौंक गई। उसके मुँह से निकल गया- 'अरे इसे तो मैं जानती हूँ।' 'कैसे जाना आपने! यह तो अभी नई ही आई है शहर में, डॉक्टर इला भारती।' मिसेज़ सरदाना ने तुनक कर कहा। इला मुस्कुरा दी। वह मिसेज़ सरदाना की तुनक मिज़ाजी से वाक़िफ़ है।

इला के पति डॉक्टर जगदीश भारती इला के पास आकर बैठ गए। गाने-बजाने की महफ़िलों को वे दोनों मिल कर एन्जॉय करते हैं।

'जगदीश मैंने इसे कहाँ देखा है मुझे याद नहीं आ रहा, पर मैं इसे जानती हूँ।' इला ने जगदीश के कान के पास मुँह कर के कहा।

'हम इसे कहीं नहीं मिले, यह शहर में नई आई है। तुम्हें ग़लत फ़हमी हो रही है। तुम इसे किसी और से रिलेट कर रही हो।' डॉक्टर जगदीश ने भी इला के कान में फुस फुसाया।

तबला हार्मोनियम अपना स्वर साध चुके थे और मीना ने लंबी हे कलेकर पंजाबी लोकगीत शुरू किया- 'वाजाँ मारियाँ बुलाया कई वार वे, किसे ने मेरी गल्ल न सुनी....' (आवाज़ें देकर बहुत बार बुलाया पर किसी ने मेरी बात नहीं सुनी) इला उसकी बुलंद आवाज़, गाने का अंदाज़ और उसके हाव-भाव सुन और देख कर कहीं खो-सी गई। यह गाना उसने पहले-पहल उसकी आवाज़ में सुना था और कई बार सुना था। उसकी अदायगी इला के भीतर रच बस गई थी। फिर बाद में उसने अमेरिका आकर पाकिस्तान के लोक गायक आलम गीर लोहार से यही गीत सुना। एक अलग अंदाज़ में। उसके बाद यह गीत किसी और गायक से सुना ही नहीं।

गाने से पहले की हेक और स्थाई तथा अंतरे के बीच की टेक, जो पंजाबी लोकगीतों को दूसरे लोकगीतों से अलग करते हैं, को सुनकर वह चक्करा गई। उसकी हेक और टेक बहुत भिन्न थी। किसी पंजाबी गायक, गायिका में उसने वह ढंग नहीं पाया, जो सिर्फ़ उसका था और जो उसे औरों से अलग करता था। गायकी की अदा और कोमल चेष्टाओं की अभिव्यक्ति का ढंग ही उसका निराला था। पार्टी में इला ने मीना में वह अंदाज़ और गीत की पंक्ति को हवा में लहराते हुए हलके से छोड़ने का वही अदा पाई, जो सिर्फ उसकी थी। इला को लगा जैसे वह उसे ही सुन रही है। गाना समाप्त हो गया, तालियों से माहौल गूँज उठा पर इला कहाँ थी! न वाह.... कहने को होंठ हिले, न ताली बजाने को हाथ..... जगदीश ने गौर से इला को देखा। ऐसा कभी नहीं हुआ कि इतनी सुन्दर गायकी पर इला फ़िदा न हो।

मीना ने एक लम्बी तान उठाई जो बुलंद लहराती हेक में बदल गई.... इला गीत को पहचान गई। मीना ने पहला बंद गाया और हाथ में मंजीरा ले लिया। 'कुल्ली राह विच पा लई यारा.... के आँदा जाँदा ताक दार हीं .... (यार के रास्ते में झौंपड़ी बना लीहै, ताकि आते-जाते दिखाई देता रहे)

ऐसे कैसे हो सकता? उसकी गायकी की नक़ल हो सकती है, पर चेहरा-मोहरा भी उस जैसा। मुस्कराने और होंठ उठाने का अंदाज़ और हाव-भाव भी उसकी तरह। कभी इला ने रेडियो पर बीबी नूरां से भी यह गीत सुना था। गीत का लुत्फ़ नहीं आया था, जो उसकी आवाज़ में सुनकर आता था। पंजाबी लोक गीत गाने के उसके अदब को वह भूल ही नहीं पाई, किसी और गायक ने उस शिष्टता में पंजाबी लोक गीतों को गाया भी नहीं। उसकी गायकी को सुनने के लिए उसके कान तरस गए थे। और अब जब कोई उसी तरह, उसी ठहराव, उन्हीं अदाओं और उसी स्टाइल से गा रहा है तो वह उसे सुन नहीं पा रही। उसके भीतर हल चल मची है। बैचैन-सी उसके बारे में जानने को उत्सुक हो गई है।

'जगदीश यह मनोज पंजाबी की कार्बन कॉपी है.... तभी पहचानी-सी लगी है।'

जगदीश तो मीना की गायकी में मस्त है, उसने इला की बात को सुन लिया पर कहा कुछ नहीं।

मीना को देख कर गुज़रे वक़्त की कई परछाइयाँ इला के भीतर लहरा गईं।

वह उस समय में लौट गई। जिसमें कई बार वह गोते लगाती है और समय के उन मोतियों को ढूँढना चाहती है, जिन्हें परिस्थितियों ने सिप्पी से अलग कर दिया। वह स्वयं को दोषी मानती हैं और उन पलों को ही तलाशती रहती है जिसमें उससे वह गलती हुई और एक प्रतिभाशाली लड़का गुमनामी के अँधेरे में गुम हो गया। अगर वह गुमनामी के अँधेरे में नहीं गया तो उसकी आवाज़ उसे सुनाई क्यों नहीं दी? वर्षों से वह उसकी आवाज़ सुनने को व्याकुल है। इला ने तो उससे वादा लिया था....

मन का अपना स्वभाव है, भीड़ में भी अकेला हो सकता है और अकेला होते हुए भी भीड़ जुटा सकता है। आज वह पार्टी में बैठी भी अकेली हो गई और बीते वक़्त की परछाँइयों में गुम हो रही है.... चिट्ठी-पत्र का ज़माना था। कम्प्यूटर और अंतर्जाल का जीवन में प्रवेश नहीं हुआ था। टीवी का पदार्पण तभी हुआ ही था, वह भी बहुत छोटे स्तर पर।

वह अपनी माँ के साथ अपने बाप को चिट्ठी लिखवाने आता था। बाप इंग्लैंड चला गया था और वहाँ जाकर उसने उनकी कोई खोज-खबर नहीं ली। वह अपनी माँ के साथ नानी के घर में रहता था और उसकी नानी सोमाइला के घर का पख़ाना उठाती थी। घर में आधुनिक शौचालय अभी बना नहीं था।

मम्मी उनकी चिट्ठियाँ लिख दिया करती थीं। कुछ देर बाद उन्होंने आना बंद कर दिया। किसी ने उस तरफ ध्यान नहीं दिया। घर में शांति जो रह रही थी। सोमा तो बाहर-ही बाहर से निकल जाती थी। पर सोमा की बेटी वीरां और उसका बेटा मनोज बाहरी आँगन के भीतर आकर बैठते थे, हालाँकि दादी जी ने उन्हें कभी घर की दहलीज़ पार नहीं करने दी। मम्मी भी दूर बैठकर चिट्ठी लिखतीं थी। दादी जी के सख़्त आदेश थे। मम्मी को अच्छा नहीं लगता था पर दादी जी के आगे वह कभी बोलीं नहीं। दादी जी घर में जिस तरह का हंगामा करती थीं, उससे सभी कतराते थे। वीरां और मनोज के जाने के बाद दादी जी पूरा आँगन धुलवातीं और साथ-साथ मम्मी और पापा की सोच को कोसती रहतीं- 'भाड़च भे जांए दादीं दरिया दिली नूँ, आग लग जाए ए दादीं सोच नूँ, एह गंद ढोंन वाले साढे साह्मणे किंदा बैठ सकदे ने' (भाड़ में भेजूँ ऐसी दरिया दिली को, आग लगे ऐसी सोच को, ये गंद ढोने वाले हमारे सामने कैसे बैठ सकते हैं?) कई दिन तक उन्हें बदबू आती रहती और आँगन घुलता रहता। सारे परिवार को बहुत कोफ़्त होती पर दादी जी को कोई कुछ नहीं कहता था। घर में दादी जी के छुआ-छात से मम्मी-पापा भी तंग थे। वे खुले ख़यालों के थे पर मर्यादा के नाम पर बँधे रहते। बड़े बुज़ुर्गों के सामने कुछ नहीं बोलते थे हालाँकि उन्हें घर, समाज और देश के लिए जो करना होता था, वे कर लेते थे।

मीना गा रही है और इला के कानों में गीतों के बोल सुनाई दे रहे हैं पर वह कहीं और ही डूबी हुई है। एक दिन ऐसा आया, वह उन्हीं पापा से चिढ़ गई, जिन पर वह गर्व महसूस करती थी और आज तक उसके भीतर उनके प्रति रोष है, आक्रोश है.....

कुछ वर्षों बाद घर में आधुनिक शौचालय बन गया। सोमा फिर भी आती रही। बाहर का आँगन, भीतर का आँगन और बगीचे के कई हिस्सों की सफाई कर जाती थी। उसके मम्मी-पापा नौकरों को कभी निकालते नहीं थे, बूढ़े होने पर भी उनके लिए कोई न कोई काम निकाल लेते थे। समय अपनी गति से आगे बढ़ गया। दादा जी इस दुनिया से विदा हो गए और उनके जाने के बाद दादी जी के अंग-प्रत्यंग ढीले होने लगे। आवाज़ की कड़क भी कम हो गई थी। सोमा भीतर आँगन में आने लगी थी, क्योंकि अब वह पख़ाना नहीं उठाती थी। दादी जी खामोश रहतीं, बस उनकी एक ही शर्त थी कि वह धुले कपड़े पहने। वह रोज़ नए-नए कपड़े पहन कर आती। परिवार को बस इतना पता था कि वीरां के पति ने इंग्लैण्ड में दूसरी शादी कर ली है और सोमा तथा वीरां मिलकर मनोज और उसकी छोटी बहन प्रीत को पाल रहे हैं। इससे अधिक उनके बारे में जानने की किसी को कोई रूचि नहीं थी।

वह डॉक्टरी के पहले साल की पढ़ाई कर रही थी। उस के सबसे छोटे और आख़िरी चाचा की शादी थी। घर में शादी का माहौल था। खूब चहल-पहल थी। पापा के छह भाई और उनका परिवार, दूर-दराज़ के सब रिश्तेदार आए हुए थे। दादा और दादी जी की गृहस्थी में यह अन्तिम शादी थी और अब दादा जी भी नहीं थे। पूरा खानदान इकट्ठा हुआ हुआ था। दादा और दादी जी की बनाई हुई हवेली थी, जिसमें सोलह कमरे, और तीन बड़े-बड़े आँगन और एक बड़ा सा बगीचा था। हवेली में सारा खानदान समा जाता था और शादी में सभी हवेली में ही ठहरे हुए थे। वैसे हवेली में इला का परिवार ही बस दादा-दादी के साथ रहता था। बाकी सब दूसरे शहरों में बस चुके थे; इसलिए शादी का पूरा बोझ इला के पापा पर था।

शादी की रस्में शुरू होने से एक दिन पहले सोमा, उसकी बेटी वीरां और उसका बेटा मनोज तथा बेटी प्रीत आए।

'अरे यह तो मनोज पंजाबी है, जिसके चित्र रोज़ अख़बारों में छपते है।' इला और इला की बहनों के मुँह से निकला। मनोज और प्रीत के जागरण में लाखों लोग आते थे। रेडियो पर इसके लोक गीत सुन कर पूरा भारद्वाज परिवार झूम उठता था। दादी तो कई बार नाचने भी लगती थी। वीरां, मनोज और प्रीत कैसे दिखते थे! क्या कर रहे थे, किसी ने जानने की कोशिश नहीं की। किस के पास इतनी फुर्सत थी कि एक गंद ढोने वाले परिवार के बारे में जाने? मनोज और प्रीत के नामों के साथ पंजाबी लिखा हुआ होता तो कोई सोच ही नहीं सका कि ये वीरां के बच्चे हैं।

उस दिन जिस गरिमा और ठस्से से मनोज और उसके परिवार ने घर में प्रवेश किया था, सब की आँखें खुली रह गई थीं। वीरां ने जिस सलीके से साड़ी पहनी हुई थी, देखते बनता था। गोरे-चिट्टे, छह फुट लम्बे, मनोज की ड्रेस चाल-ढाल सब को लुभा गई थी। इतना आकर्षित व्यक्तित्व कि दादी जी ने भी अपनी ऐनक को बार-बार साफ करके उसे देखा। इला की बड़ी बहन पारुल ने ज़ोर से सब को आवाज़ लगाई - 'अरे भाग कर आओ, मनोज पंजाबी आया है।' सभी अपने कमरे छोड़ कर आँगन में आ गए।

उनकी बस इतनी तरक़्क़ी हुई थी कि बाहर वाला आँगन छोड़ कर, जहाँ उन्हें पहले बिठाया जाता था, उस दिन भीतर वाले बड़े आँगन में बिठाया गया। उनका स्टेटस थोड़ा बदल गया था।

पापा-मम्मी वहीं खड़े थे। मनोज ने उनके पाँव छुए। पापा ने बताया कि सारा परिवार मनोज को पसंद करता है, इसलिए शादी का जागरण वह करेगा और संगीत का सारा इंतज़ाम भी उसी के कंधों पर है। ज्यों ही पापा ने कहा- 'मैं जानता हूँ मनोज तुम्हें जागरण का बहुत पैसा मिलता है, मैं पूरी कोशिश करूँगा, तुम्हें तुम्हारा हक़ मिले।'

मनोज हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया और मम्मी-पापा के आगे सिर झुकाते हुए बोला-' आज मैं जो कुछ हूँ, आप की बदौलत हूँ। आपने समय पर मुझे स्कूल में दाख़िला न दिलवाया होता तो आज मैं कॉलेज नहीं पहुँचता। आपने ही मुझे संगीत गुरु भी ढूँढकर दिया, जिसने मुझे संगीत की सही जानकारी दी। सारा खर्चा उठाया। माँ को सिलाई स्कूल में भेजा और आज वह सिलाई टीचर है। क्या-क्या गिनवाऊँ? चाचा जी की शादी में हमारी तरफ से यह छोटा सा योगदान है। मैं आपका क़र्ज़ तो कभी उतार नहीं पाऊँगा।' इतना कह कर वह घुटनों के बल झुक गया।

पापा ने उसे बाज़ुओं से उठाया और कहा- 'मनोज, तुम्हारी तकदीर में यहाँ पहुँचना लिखा था। मैं न करता कोई और करता। चलो अब सँभालो अपना काम।' इला को अपने मम्मी-पापा पर इतना गर्व हुआ, कि उसकी आँखें नम हो

गईं। डॉक्टरी की पढ़ाई करते हुए, इला की सोच और दृष्टिकोण में वैसे भी बहुत परिवर्तन आ गया था। जात-पात, भेद-भाव, ऊँच-नीच के प्रति उसका नज़रिया बहुत बदल गया था। संकीर्णता की परिधियाँ वह लांघ गई थी।

मनोज की इस अदा पर घर की सब लड़कियों के दिल धड़के। एक तरह से सब उस पर फ़िदा हो चुकी थीं। सभी उम्र के उस दौर में थीं, जिस में किसी एक के लिए जब आकर्षण पैदा हो जाता है, तो कोई तर्क का मन हीं करता। सात दिन शादी की रस्मों के उत्सव मनाते रहे, जो पंजाबियों में आम बात है। सातों दिन मनोज लड़कियों में घिरा रहा। परिवार के सभी सदस्य उनके इस व्यवहार के प्रति लापरवाह रहे। शायद शादी का माहौल था, देख कर भी सब अनदेखा करते रहे।

दिल तो उसका भी धड़कता, जब मनोज एक हाथ ऊपर उठाकर, एक हाथ कान पर रख कर हेक लगाता। मनोज की तान जब लम्बी होती तो उसका दिल उछल-उछल कर उसके साथ भागता। मनोज को देखकर, उसे गाता सुन कर उसके भीतर जो हलचल होती, उसे वह समझ नहीं पा रही थी और वे कैसी भावनाएँ थीं, उसे भी जान नहीं पा रही थी। पर वह महसूस करती कि मनोज के लिए उसे कुछ होता।

हालाँकि मेडिकल कॉलेज में जगदीश उसका मित्र बन गया था और वह मित्रता गहरी हो रही थी। मनोज के प्रति अपनी इस दीवानगी से वह बेख़बर नहीं थी। इला यह ज़रूर समझ गई थी कि वह मनोज की गायकी पर तो निस्संदेह बेहद फ़िदा थी। उन्हीं भावुक क्षणों में उसने मनोज का हाथ अपने हाथ में लेकर वादा ले लिया कि वह खूब रियाज़ करेगा और गाता रहेगा। इला जहाँ भी रहेगी....उसके गीत सुनती रहेगी.... उसकी सबसे बड़ी प्रशंसिका.... वह ही होगी।

इला के ताऊ जी ने मनोज का हाथ पकड़े उसे देख लिया। हालाँकि उन्होंने अपनी लड़कियों की हरकतें भी देखीं थी, जिन्हें उन्होंने नज़र अंदाज़ कर दिया। शादी समाप्त होने तक वे चुप रहे। शादी के बाद की शाम को जब दुल्हन के मायके में दूल्हा-दुल्हन फेरा डालने गए तो इला के ताऊ जी ने सब को इकठ्ठा कर लिया और कस कर इला के गाल पर एक तमाचा जड़ दिया- 'हाथ थामने को क्या एक.....गंद ढोने वाले के हाथ रह गए थे....बदबू नहीं आई....' (फिर उन्होंने एक भद्दी सी गाली दी)

इला जो एक शिष्टाचारी, मर्यादित, मीठा बोलने वाली लड़की थी.... उसे याद आ रहा है, वह भड़क गई थी और उसने पलटवार किया-' हाँ नहीं आई थी बदबू.... मुझे सिर्फ इत्रकी खुशबू आई थी, जो उसने लगाया हुआ था.... वह जागरण करता है, देवी माँ के चरण-स्पर्श करता है, उसे छूता है, जब देवी माँ को उससे बदबू नहीं आती तो मुझे कैसे आती....? आप भी तो सब उसके साथ चिपट-चिपट कर तस्वीरें खिंचवा रहे थे, आई आपको बदबू!'

पापा ने कड़क कर कहा- 'इला, बस चुप।'

इला बहुत भन्नाई हुई थी, शादी में कई बातें उसे बुरी लगी थीं, उसका भी उसे गुस्सा था- 'क्यों पापा! यह दोहरी मानसिकता क्यों? जब तक मनोज कुछ नहीं था तो बाहरी आँगन में बैठता था, जो बस आने-जाने का रास्ता है... अब जब वह कुछ बन गया तो सही वाले आँगन में बैठाया, पर दहलीज़ के भीतर फिर भी नहीं! जिसे आपने इंसान समझ कर पढ़ाया, जिसकी माँ को सेल्फ़ सपोर्टेड बनाया, वे लोग घर के भीतर आने के लिए इंसान नहीं? यह दोगला पन है...।'

'इला चुप हो जाओ, वरना मेरा हाथ भी उठ जाएगा।' इला के पापा ने गुस्से में कहा। इला की माँ उसे वहाँ से दूर करने आईं.... वह उनसे छिटक कर परे हो गई। बाकी सब लड़कियाँ तो सहम गईं और दूर जाकर खड़ी हो गईं। सब ने मनोज को अपनी तरफ आकर्षित करने की कोशिश की थी।

'मैं अब कोई बच्ची नहीं हूँ। बहुत कुछ समझती हूँ। सारे परिवार को इकट्ठा करके मुझे थप्पड़ मारा जा सकता है, पर सब के सामने मेरे प्रश्नों के उत्तर नहीं दिए जा सकते। मनोज पंजाबी को शादी में बुलाकर सारे शहर में आप की इज़्ज़त बन गई, आपकी वजह से मनोज पंजाबी यहाँ तक पहुँचा, घर-घर में इसकी चर्चा होगी। घर में सब जब उसके गाने सुनते थे, उसके गानों पर नाचते थे तब कभी नहीं बताया कि यह वही मनोज है जो छुटपन में घर आता था। क्यों नहीं बताया? बोलूँगी तो दो-चार चमाटे और पड़ जाएँगे। 'एक क्षण के लिए इला रुकी थी, माँ ने फिर उसे रोकना चाहा। वह दादी जी की ओर देख कर बोली-' मैंने आपके सारे पाप भी धो दिए.... मनोज को दहलीज़ के उस पार से इस पार ले आई थी, कमरे के भीतर, यहाँ सोफे पर बिठाया था (उसने सोफे की ओर इशारा करते हुए कहा), उससे गाना भी सुना था। सोचा था क्या पता

दादी जी के ठाकुर उसके अंदर ही बैठे हों। दादी आप ही कहती हैं कि क्या पता किस मेहमान में भगवान छिपे हों!' कह कर इला वहाँ से जाने को मुड़ी और तेज़ी से बाहर निकल गई।

परिवार इला की अशिष्टता, अखड़ता को देख कर सकते में आ गया था, उसके जाने के बाद वे सब आपस में बात भी नहीं कर पाए।

दूसरे दिन सब के उठने से पहले इला वापिस होस्टल जा चुकी थी। उसके बाद इला घर लौटकर नहीं आई... दादी जी ने जब यह लोक त्यागा तो दाह-संस्कार वाले दिन वह एक दिन के लिए आई थी। तभी उसने देखा था, सोमा की जगह कोई और सफाई कर्मी थी। कई दिनों से इला ने मनोज की आवाज़ में कुछ नया नहीं सुना था। आकाशवाणी पर वह महीने में एक बार तो ज़रूर गाता था। समझ गई! उसकी लापरवाही, उसके व्यवहार और भावुकता में मनोज का हाथ पकड़ने की सज़ा मनोज और उसके परिवार को मिल गई। उसके परिवार ने दिखा दिया था, वह कितना ताकतवार है। अँधेरे से उजाला दिखा सकता है तो उजाले से अँधेरे में फेंक भी सकता है। जिन पर गर्व करती थी इला, उन्हीं के प्रति रोष और गुस्से से भर गई। पहले की तपिश अभी ठंडी नहीं हुई थी।

दाह-संस्कार के बाद वह घर में रुकी नहीं, परीक्षाओं का बहाना बनाकर लौट आई। इला के मम्मी-पापा ने कभी उसकी नाराज़गी जानने और दूर करने की कोशिश नहीं की, उसने भी कभी उनकी ओर की कहानी नहीं जानी, कोई उपक्रम ही नहीं किया। संवाद की कमी ने दोनों तरफ ग़लत फ़हमियों का भण्डार भर दिया। दोनों तरफ से कभी बैठ कर उस भण्डार को ख़ाली नहीं किया गया, समस्याओं को सुलझाया नहीं गया.... उम्र के इस दौर में इला इस सच्चाई को समझती है। वह समय ही ऐसा था, माँ-बाप अपनी बातें बच्चों पर थोप देते थे, क्यों बच्चे वही करें जो वे चाहते हैं? कभी समझाया नहीं जाता था। बच्चों से बस यही उम्मीद की जाती कि वे उनके निर्णयों को स्वीकार करें।

इला का मन बचपन से ही विद्रोही हो गया था, कई बार वह अपने इस आक्रोश की चीर-फाड़ करती है। इला के दादा ज़मीदार थे, उनका और दादी जी का नौकरों, गरीबों के प्रति अमानवीय व्यवहार उसके मन को कचोटता था। उसका मन और भी दुखता था जब वह अपने मम्मी-पापा को सब कुछ जानते, समझते और महसूस करते भी ख़ामोश पाती। वह उन्हें शोषण का हिस्सा समझती थी, उनके अच्छे कामों पर गर्व महसूस करती पर ग़लत बातों पर नाराज़ भी होती। बिना कसूर के भी जब उसके दादी जी उसकी मम्मी को अपमानित करते और पापा माँ को ही चुप रहने को कहते तो वह कुढ़ जाती। बिफर जाती, गुस्से में कह देती" दादी जी पापा की माँ है, तो आप हमारी माँ है, एक माँ दूसरी माँ की बेइज़्ज़ती कैसे कर सकती है? पापा अपनी माँ से अपने बच्चों की माँ की बेइज़्ज़ती कैसे करवा सकते हैं?" उसकी मम्मी और बहनें उसे शांत करतीं पर वह दोहरे माप दंडों के अंतर्द्वंद्व में उलझी रहती। यही द्वंद्व युवा वस्था में उसके आक्रोश का कारण बना। किसी ने भी उसे समझाने और बातों को स्पष्ट करने की कोशिश नहीं की। हालाँकि माँ-बाप अपने फ़र्ज़ निभाते रहे, और इला उनके प्रति अपने, बिना किसी गंभीर विषय, बिना अतीत में लौटे औपचारिक से संबंध।

जगदीश और इला की दोस्ती में जब कोमल भावनाओं ने प्रवेश किया और उन दोनों ने शादी का निर्णय लिया तो वह अपने परिवार को बताना नहीं चाहती थी। उन्हें अपनी इस ख़ुशी में शामिल नहीं करना चाहती थी। उसके भीतर अपने परिवार के प्रति बहुत गुस्सा था। इसलिए इला और जगदीश दोनों अमेरिका आ गए। नब्बे के दशक में अमेरिका आना आसान था। यहाँ डॉक्टरों की बहुत किल्लत थी। यहाँ आकर उन्होंने शादी कर ली, और अपने परिवारों को बता दिया।

वे दोनों जानते थे कि अमेरिका खुले विचारों वाला समृद्ध, प्रगतिशील देश है। जात-पात, ऊँच –नीच का कोई भेद-भाव नहीं। किसी को भी दहलीज़ के बाहर नहीं बैठाया जाता, घर के भीतर एक ही सोफे पर सब बैठते हैं। शादी का समाचार पाकर जगदीश का परिवार बहुत खुश हुआ। वे इला को पहले ही स्वीकार कर चुके थे और उनकी मर्ज़ी से ही वे दोनों अमेरिका आए थे। पर इला के परिवार ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। उसने भी स्वीकार कर लिया कि उसके परिवार के लिए उन दोनों का कोई महत्त्व नहीं। परिवार ने उन्हें जीवन से निकाल दिया है। शादी के एक वर्ष बाद इला के बेटा हुआ। इला की दो सगी बहनें भी इस देश में ही रहती हैं और उसके मम्मी-पापा बेटियों को मिलने आए। उसके पास भी आए, खूब दिलखोल कर सब के

लिए उपहार लाए। उस समय बाकी बेटियों से अधिक दिन इला के पास रहे थे और अब भी रहते हैं। इला भी हर बार उनके सारे टेस्ट करवाती है, उनकी बिमारियों का इलाज करती है, पूरे मान-सम्मान से उन्हें रखती है। फ़र्ज़ों में कोई कमी नहीं होने देती; पर दिल से कोई भी एक दूसरे के साथ अभी तक खुल नहीं पाया। दोनों ओर से रिश्ता निभाया जा रहा है, बस औपचारिक-सा.... उसके कान में गीत के बोल पड़े.... 'वे सज्जना तेरी इक नज़र नूँ मैं तरस दी'

वह भी तो मनोज की आवाज़ को तरस रही है। उसका दिल भर आया। उसकी गलती की सज़ा मनोज को मिली। जिसकी चुभन उसे गहरे महसूस होती है। वह अपराध बोध से बुरी तरह घिरी रहती है।

गीत समाप्त होते-होते इला ने आँखें पोंछ लीं। दिल का गुब्बार आँखों में उतर आया था। एक अजीब सी दृढ़ता उसके चेहरे पर आ गई, जिसे जगदीश देख कर मुस्करा पड़ा। जगदीश मनोज के प्रति इला की सद्भावनाओं को जानता है।

गीत समाप्त हुआ। तालियाँ बज उठीं... रात्रि भोज के लिए मेज़बान दिलेर छाबड़ा ने सबको आमंत्रित किया।

मीना को लोगों ने घेर लिया। इला उसके पास जा खड़ी हुई, इस चाहता में कि उसे अकेला पाते ही वह उससे बात कर सके। लोगों के छटते ही इला ने मीना को कहा- 'मीना मुझे तुमसे बहुत ज़रूरी बात करनी है, ज़रा इधर आना... और उसे उसी कोने में ले गई, जहाँ वे पहले बैठे थे, कम रौशनी वाले कोने में।'

उन दोनों को वहाँ बैठते देख जगदीश ने कमल, मीना के पति को कहा- 'यार इन को बातें करने देते हैं, चल हम अपनी प्लेटें बनाते हैं और इनके लिए भी ले आते हैं।'

'बाई द वे, माई नेम इज़ जगदीश एन्ड आई एम डॉ. इला भारती' ज़ हस्बैंड।' उन्होंने इला की ओर इशारा करते हुए कहा। कमल मुस्करा कर उनके साथ चल दिया।

मीना हैरान-सी बैठ गई, इन आंटी को उससे क्या बात करनी है? उसने देखा था कि जब वह गा रही थी, यह आंटी बहुत तन्मयता से सुन रही थीं, गीत के कई बोलों पर इनकी आँखें भी भरी थीं।

'मीना, मनोज पंजाबी तुम्हारे क्या लगते हैं?' इला ने बिना किसी भूमिका के सीधा प्रश्न किया।

मीना हैरान-सी इला की आँखों में देखने लगी.... कुछ पल देखती रही फिर बोली- 'आंटी आप उन्हें कैसे जानते हैं!' 'कॉलेज के दिनों से मैं उनके गाने सुनती आ रही हूँ। आकाशवाणी से उनके गीतों का सीधा प्रसारण होता था। हम बड़े शौक़ से सुना करते थे। मैं नहीं जानती उन प्रसारणों को रिकॉर्ड किया गया था या नहीं। अगर किया गया होता तो वे गीत ज़रूर सुनाई देते। आख़िरी बार पटियाला में मैंने उन्हें एक शादी में आमने-सामने सुना था। उसके बाद से आज तक उन की आवाज़ नहीं सुनी। न रेडियो पर, न कहीं और.... आज तुममें और तुम्हारी गायकी में उनकी झलक पाई तो पूछने से स्वयं को रोक नहीं पाई।' इला एक ही साँस में बोल गईं। 'जी वे मेरे डैड थे।' मीना ने उदास स्वर में कहा। 'थे से क्या मतलब?' इला ने घबरा कर कहा। 'जी वे अब इस दुनिया में नहीं हैं।' मीना की आवाज़ में उदासी और गहरा गई। 'यह सब कैसे हुआ?' इला ने भी डूबती हुई आवाज़ में पूछा। 'आंटी पटियाला की जिस शादी की आप बात कर रही है, उस शादी से पहले ही डैड के प्रोग्रामों का इंग्लैंड में टूर किसी ऑर्गेनाइज़र ने बुक कर लिया था। उस शादी की वजह से वह टूर एक हफ़्ते के लिए पोस्टपोन किया गया था। शादी के फ़ौरन बाद डैड, दादी और बुआ इंग्लैंड के टूर पर चले गए। तीन महीने डैड के ग्रुप ने वहाँ बहुत धूम मचाई। उसी टूर में मॉम और डैड मिले थे। मॉम खुद भी बहुत अच्छी गायिका हैं। टूर समाप्त कर अपने देश वापिस आने से पहले मॉम और डैड ने शादी कर ली। मॉम इंग्लैंड में जन्मी-पली वहीं की सिटीज़न हैं। डैड के टूर की सफ़लता ने पंजाब के कई गायक और गायिकाओं के मन में जलन पैदा कर दी; डैड को इसका आभास तक नहीं हुआ। वे तो सभी को अपना दोस्त समझते रहे। इंग्लैंड से सफल टूर कर लौटने और उनकी शादी की ख़ुशी में कुछ दोस्तों ने पार्टी रखी। डैड बहुत प्रसन्न थे पर उसी पार्टी में डैड को शराब में कुछ मिलाकर पिला दिया गया; जिसमें उनके गले में इन्फेक्शन पैदा हो गई। तभी सबको समझ आया कि ईर्ष्या क्या रूप ले सकती है? एक छोटी जात का लड़का उनसे आगे कैसे बढ़ सकता है?

आंटी आप तो वहीं से आईं हैं, सब समझती हैं, वह समय कैसा था!'

'ओह हो! फिर क्या हुआ....?' 'मॉम उन्हें वापस इंग्लैंड ले गईं। वहाँ पर उनका इलाज हुआ। इंफेक्शन तो ठीक हो गई पर डैड की वोकल कॉर्ड डैमेज हो गई। डॉक्टरों ने उन्हें गाने से मना कर दिया था।' 'तभी मैंने उनकी आवाज़ नहीं सुनी।' इला ने गहरी साँस लेकर कहा।

'नहीं आंटी डैड पूरी दुनिया में शो करते रहे, गाते रहे। उनके अपने देश के ईर्ष्यालुओं ने, जो अब उनके दुश्मन बन चुके थे, उनका नाम उभरने नहीं दिया। उनके अहम्पर डैड बहुत बड़ी चोट कर रहे थे। बावजूद गले की तकलीफ के, डैड गा रहे थे; जो उनके षड्यंत्र की वजह से डैमेज हुआ था। उनके टूर की कोई खबर नहीं छपती थी। ख़बरों को छपने ही नहीं दिया जाता था। उन्हें बाहर का गायक बना दिया गया।' मीना बहुत भावुक हो गई।

'तभी मैंने उनके बारे में कोई समाचार नहीं देखा। पर उनकी मृत्यु कैसे हुई?' इला भावुकता में कह गई।

'डॉक्टरों के मना करने पर भी वे वर्षों शो करते रहे। उससे उनकी वोकल कॉड और भी ख़राब हो गई। उनकी आवाज़ गाते-गाते रुकने लगी थी। डॉक्टरों और मॉम ने उनका गाना पूरी तरह से रोक दिया। इससे डैड निराश हो गए।' मीना की आवाज़ में कंपन आ गया।

'गाना मनोज पंजाबी की ज़िन्दगी थी। उनकी अस्मिता, उनकी पहचान थी। वह ज़िन्दगी ही उनसे छिन रही थी। अवसाद आना स्वाभाविक था।' इला बेहद भावुक हो गई।

'मॉम भी यही समझती थीं पर जब डैड ने उन्हें बताया कि वे अपने सच का सामना कर सकते हैं, पर उनके फ़ैन नहीं। किसी फ़ैन ने उनसे वादा लिया था कि वे रियाज़ करते रहेंगे और गाते रहेंगे, दुनिया के किसी भी कोने में वह उनकी गायकी को सुनते रहना चाहता था।' कहकर मीना कुछ पलों के लिए ख़ामोश हुई। इला के बदन में बड़ी तेज़ झुरझुरी हुई।

'मॉम ने डैड को समझाया कि उस फ़ैन ने आपकी गायकी को ज़िंदा रखने के लिए वादा लिया था। वह तो औरों के द्वारा भी ज़िंदा रह सकती है... उन्होंने डैड के लिए एक स्कूल खोला, जिसमें मॉम, मैं, बुआ और उनके बच्चे पहले स्टूडेंट्स थे। अब उस स्कूल में बहुत से स्टूडेंट्स हैं। कुछ समय बाद डैड के गले में इंफेक्शन फिर हो गया और वह पूरे बदन में फैलने लगा। डॉक्टरों ने जब जवाब दे दिया तो मॉम और दादी ने लन्दन में एक बहुत बड़ा शो रखा; जिसे शुरू दादी ने किया।' इला की जिज्ञासा मीना देख रही है।

'दरअसल डैड की पहली गुरु दादी हैं। उनकी गायकी के गुर और स्टाइल उन्हीं की देन है। उस शो में मॉम, मैंने, बुआ और उनके बच्चों ने भी गाया था। देश और विदेश में लोकगीतों का इतना बड़ा हिट शो तब तक नहीं हुआ था। पहली बार देश की अख़बारों ने इस शो के बारे में लिखा।' मीना बोल रही है और इला हैरान-सी उसे देख रही है... उसके दिमाग में एक ही बात घूम रही है, वीरां मनोज की पहली गुरु है और मनोज दूसरे संगीत शिक्षकों को मान देता रहा; ताकि उसे स्वीकार किया जाए। दूरियाँ एक दूसरे के प्रति इंसान को कितना अनजान बना देती हैं। वीरां इतनी काबिल महिला हैं और उसका परिवार तो उसे बस..... 'उस शो के बाद डैड बेइंतिहा संतुष्ट थे। अन्ततः देश के ईर्ष्यालु कलाकारों को उन्होंने उत्तर दे दिया। कोई किसी के शरीर को मार सकता है, उसकी रूह और प्रतिभा को नहीं...। डैड इस बात से भी खुश थे कि उन्होंने अपने फ़ैन का वादा पूरा किया। कई कलाकार उसकी गायन शैली को आगे ले जाएँगे; उसे और निखारेंगे। शो के दो दिन बाद डैड ने प्राण त्याग दिए।' कह कर मीना खामोश हो गई।

इला सोच के समंदर में डूबती हुई बोली- 'उस फ़ैन ने मनोज पंजाबी को मार दिया?'

'हम भी यही सोचते थे! पर जब डॉक्टरों ने समझाया कि अगर वे शो करना पहले ही छोड़ देते, उसी समय मर जाते; क्योंकि उन्होंने अभी कुछ किया ही नहीं था। वे भीतर से दुखी थे, दोस्तों के धोखे और बीमारी के चलते अवसाद उन्हें शीघ्र ही निगल जाता। उनकी इन्फेक्शन तो अंदर से गई ही नहीं थी, कभी भी लौट आती। पूरा परिवार उस फ़ैन का आभारी हैं। एक ड्राइविंग फ़ोर्स की तरह वह फ़ैन उनके साथ रहा। उन्होंने अनगिनत कार्यक्रम किए। वो कलकॉड ने भी ढेरों प्रोग्राम करने के बाद जवाब दिया। कोई तो पॉवर थी उनके साथ। आंटी अगर वे पहले चले जाते तो स्कूल कैसे खुलता और हम सब ट्रेंड कैसे होते? उनकी दुःख की घड़ियों में तो मैं पैदा हुई थी। मुझे काबिल बना कर संतुष्ट होकर वे इस दुनिया को छोड़ कर गए।' इतना कह कर वह उठ खड़ी हुई।

इला एक अपराध बोध से मुक्त हुई कि वह और उसके मम्मी-पापा मनोज पंजाबी की गुमनामी के ज़िम्मेदार नहीं हैं। पर उसका मन बेहद बोझिल हो गया है, उसे खड़े होना मुश्किल हो रहा है। किसी तरह उसने अपने शरीर को खड़ा किया और कहा- 'मनोज पंजाबी की गायकी को कोई मार नहीं सकता, वह ज़िंदा रहेगी, आज तुमने प्रूव कर दिया।' और उसने मीना को गले लगा लिया।

101 Guymon Ct., Morrisville, NC-27560
मोबाइल: 919-801-0672, ई-मेल: sudhadrishti@gmail.com

कविता

अमनप्रीत कौर चत्रथ

मैं कौन सी आग में जली हूँ
कोई जानता ही नहीं
मैं कौन से
रंग में ढली हूँ
कोई पहचानता ही नहीं।

कभी हँसी
मेरी रूह की खुराक थी
आज हँसी
मेरी उदासी के कफन में
दफन हो गई।
विना किसी वात के
हँस देना
मेरी आदत थी
आज वात भी
सोच कर करना
मेरी फितरत हो गई।
कुछ तो रिश्तों के संग
कट जाएगी जिन्दगी
कुछ रिश्तों से गिले शिकवे
वढ़ा जाएगी
कुछ रिश्तों को
रोता छोड़ जाएगी
तो कुछ रिश्तों को
आसान कर जाएगी
कहीं हँसी और विश्वास होगा, तो
यों ही रिश्तों के संग
कट जाएगी ज़िंदगी।

V. & P. Nathuwal, Tehsil - Tohana
Distt. Fatehabad, 'Haryana'

INDSAFE CONSULT

Chartered Engineers and Consultants

A 20 years old Company devoted to Excellence in Industrial Safety

- Competent persons for statutory inspection, testing and certification of Pressure Vessels, Cranes/Lifts etc. under factory Act in Punjab, Haryana, H.P and J & K.
- Industrial Safety Audits as per IS: 14489.
- Industrial Safety trainings provided by National Safety Council faculty.
- Chartered Engineers Services.
- Approved valuers for plant and machinery.
- Designing of petroleum storage installations and approvals.
- Approved Boiler Engineers for H.P.
- Fire Safety trainings and fire safety audits.

Contact: Er. V. K. Khanna

Address:
 # 1046, Phase – IX,
(Sector – 63), Mohali – 160062
(Punjab)
Phone – 0172 – 5090309,
0172 – 2233784,
+91 – 9814036051
Email – vinodk60@yahoo.co.in,
vinodk60@hotmail.com